# समुद्री जीवन के लिये जलवायु जोखिम सूचकांक

## प्रिलिम्स के लिये:

जलवायु परिवर्तन, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र, वैश्विक तापन, पेरिस समझौता

## मेन्स के लिये:

समुद्री जीवन के लिये जलवायु जोखिम सूचकांक

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में **समुद्री जीवन के लिये जलवायु जोखिम सूचकांक** शीर्षक से एक नया अध्ययन प्रकाशित किया गया था, जो**लगभग 25,000 समुद्री प्रजातियों और उनके पारिस्थितिक तंत्र के लिये जलवायु जोखिम** को रेखांकित करता है।

- यह नया सूचकांक समुद्री जीवन के प्रबंधन और संरक्षण के लिये **जलवायु-स्मार्ट दृष्टिकोण का समर्थन करने का आधार** तैयार करता है।

## निष्कर्ष क्या हैं?

- **समुद्री पारिस्थितिकी प्रणालियों को बदलना:**
  - महासागर की सतह का अधिक गर्म होना और जलवायु दशाओं के कारण**प्रजातियों को गहरे, अधिक उत्तरी और ठंडे स्थानों पर जाना पड़ रहा है, इससे उनके व्यवहार में बदलाव** देखा जा सकता है। यह समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को मौलिक और अभूतपूर्व तरीके से नया आकार दे रहा है।
- **उच्च उत्सर्जन परिदृश्य:**
  - उच्च उत्सर्जन परिदृश्य में देखें तो, वैश्विक औसत महासागर तापमान वर्ष 2100 तक 3-5 डिग्री सेल्सियस बढ़ जाएगा। इस परिदृश्य के तहत 25,000 प्रजातियों में से **लगभग 90% उच्च या गंभीर जलवायु जोखिम में हैं।** अपनी भौगोलिक सीमा के 85% में आम प्रजातियाँ खतरे में हैं।
- **उपोष्णकटिबंधीय और उष्णकटिबंधीय पारिस्थितिकी तंत्र:**
  - **उपोष्णकटिबंधीय और उष्णकटिबंधीय पारिस्थितिक तंत्रों** में जैवविविधता हॉटस्पॉट एवं निकटवर्ती पारिस्थितिक तंत्र में जोखिम सबसे अधिक होता है, ये क्षेत्र वैश्विक मछली पकड़ने के 96% का समर्थन करते हैं।
  - **शार्क और टूना जैसे शीर्ष शिकारियों को खाद्य शृंखला के नीचे की प्रजातियों की तुलना में काफी अधिक जोखिम होता है।** इस तरह के शिकारियों का पारिस्थितिकी तंत्र की संरचना और कार्यात्मकता पर व्यापक प्रभाव पड़ सकता है।
- **अल्प आय वाले राष्ट्र:**
  - उच्च उत्सर्जन के तहत कॉड और लॉबस्टर जैसी मछली प्रजातियों के लिये जलवायु जोखिम का खतरा कम आय वाले देशों के क्षेत्रों के भीतर लगातार अधिक होता है,, **यहाँ लोग अपनी पोषण संबंधी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये मत्स्य पालन पर अधिक निर्भर रहते हैं।**
  - यह जलवायु असमानता का एक और उदाहरण प्रस्तुत करता है, इसमें कम आय वाले वे देश शामिल हैं जिन्होंने जलवायु परिवर्तन में कम-से-कम योगदान किया है और **अधिक आक्रामक रूप से अपने उत्सर्जन को कम कर रहे हैं, इसके बावजूद जलवायु परिवर्तन के सबसे** खराब प्रभावों का सामना कर रहे हैं,, **जबकि उनके पास अनुकूलन करने की सबसे कम क्षमता है।**
- **कम उत्सर्जन परिदृश्य:**
  - कम उत्सर्जन परिदृश्य के तहत पेरिस समझौते में दो डिग्री सेल्सियस ग्लोबल वार्मिंग सीमा के अनुसार, समुद्र के औसत तापमान में**वर्ष 2100 तक 1-2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होने की संभावना है।**
  - इसके अंतर्गत भविष्य में लगभग सभी समुद्री जीवों (98.2%) के लिये कम जलवायु जोखिम होगा। पारिस्थितिक तंत्र संरचना, जैवविविधता, मत्स्य पालन और कम आय वाले देशों के लिये जोखिम बहुत कम या समाप्त हो जाता है।

## सिफारिशें:

- जलवायु शमन को प्राथमिकता देने वाले अधिक टिकाऊ पथ को चुनने से समुद्र के जीवन और लोगों को स्पष्ट लाभ होगा।
- जलवायु जोखिमों को कम करने के लिये उत्सर्जन में कटौती सबसे प्रत्यक्ष दृष्टिकोण है।
- उत्सर्जन को कम करने के अलावा हमारे महासागरों की रक्षा के लिये एक वार्मिंग जलवायु के अनुकूल होने के तरीके खोजना अनिवार्य है।
- नए तरीकों और अनुकूलन रणनीतियों को शामिल करने, दुनिया के कम संसाधन वाले हिस्सों में क्षमता विकसित करने तथा अनुकूलन उपायों के पेशेवरों व विरोधियों के बीच संतुलन की आवश्यकता है।

## यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा विगत वर्ष के प्रश्न

**प्रश्न. समुद्री पारिस्थितिकी पर 'मृतक्षेत्रों' (डेड ज़ोन्स) के विस्तार के क्या-क्या परिणाम होते है? (मेन्स-2018)**

## स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/a-climate-risk-index-for-marine-life